Sem-6, DSE-3
(Ref.)

# बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' के काव्य में राष्ट्र-चेतना

भारतीय साहित्य में राष्ट्र-चेतना प्रारम्भ से ही प्रमुख प्रवृत्ति बनकर उभरी है। "अस्मान् वृहणीस्पटेमि- राष्ट्रीय वर्धय" कहते हुए अथर्ववेद राष्ट्र के प्रति सम्मान और उसकी गौरव रक्षा का भाव व्यक्त करता है। तब से लेकर आज तक यह राष्ट्रीय भावना अनेक साहित्यकारों का प्रिय विषय रहा है। हिन्दी साहित्य का आधुनिक युग राष्ट्रीयता के उभार का काल है। बीसवीं सदी पूर्वार्द्ध का हिन्दी साहित्य इस चेतना को स्वतंत्रता सेनानियों के साथ जन-जन तक पहुँचाने में पूर्णतः सफल हुआ है। स्वतंत्रता आन्दोलन के सक्रिय योद्धा कवि बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' ऐसे ही कवि हैं, जिनकी वाणी का ओज अतुलनीय है — "कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ,
जिससे उथल-पुथल मच जाए।
एक हिलोर इधर से आए, एक हिलोर उधर से आए॥"

स्वतंत्रता आन्दोलन में भाग लेते हुए छः जेल यात्राएँ कर नौ वर्ष जेल में बितानेवाले नवीन जी की श्रेष्ठ रचनाएँ इसी दौरान रची गयीं। 'रश्मिरेखा', 'क्वासि', 'प्राणार्पण', 'हम विषपायी जनम के' जैसे अनेक काव्य-ग्रंथों में उनकी राष्ट्र-चेतना सर्वाधिक मुखरित है, तथापि उनकी रचनाओं में स्वच्छंदतावादी प्रेम और वेदना की कोमलता भी कम नहीं। वे कलम के सिपाही ही नहीं, युद्धभूमि के सेनानी भी हैं। क्रांति और विद्रोह की उग्र नीति के संचालक कवि नवीन को अतीत प्रिय है तो वर्तमान से भी लगाव है। पराधीनता जातीय गौरव को भुला देती है, किन्तु उसकी ऊर्जा हर असंभव को संभव बनाती है। — "शैलों के फूलों से सज्जित सुख-शय्या हो जाने दे,
भर ले अंगारे करवट में, हूक-लूक उठ जाने दे,"
अपने 'पराजय-गीत' में नवीन का कवि पराजय में भी विजयी की भाँति मस्तक उठाकर चलना जानता है। —

"अरे पराजित, ओ रणचण्डी के कपूत हट जा, हट जा
अभी समय है, कह दे माँ मेदिनी जरा फट जा, फट जा।"

गाँधीजी की अहिंसावादी नीति का भी नवीनजी पर प्रभाव है। 'विप्लव गायन' कविता का कवि किन्तु मानता है कि सत्य और अहिंसा के शस्त्र गुलामी की जंजीरें नहीं काट सकतीं, समय हिंसक क्रान्ति का है। उनकी अनेक कविताएँ जागरण की प्रेरणा देती हैं। वे उग्रता के कवि हैं। छल-प्रपंचों, कुत्सित आचारों वाले राजनीतिज्ञों की चुनौतियों का मुकाबला सिंह की गर्जना या महारुद्र के ताण्डव नृत्य से करना उनका धर्म है। इस क्रान्तदर्शी विप्लवी को अपनी जीत पर अगाध विश्वास है। वह क्रान्ति वज्र का घन-प्रहार है, विद्रोही है, विप्लवी है। —

"उस दिन हम विस्मित देखेंगे, यह निविड़ तिमिर होते विलीन
उस दिन हम सस्मित देखेंगे, हम हैं अदीन, हम शक्ति-पीन।"

इस प्रकार नवीनजी की राष्ट्रीयता की भावना नाना आयामों में प्रस्तुत हुई है। विदेशी शासन की क्रूर हिंसक दमन नीति का मुकाबला आक्रोश व उत्तेजना के बल पर वह चाहता है। कवि राष्ट्र के स्वर्णिम अतीत से संबल लेकर वर्तमान को संदेसा देता है। इस वर्तमान दशा से क्षुब्ध होकर वह ओजस्वी गीतों की ऐसी रचना करता है जो निरीह, दीन, कातर में प्राण फूँक दे। नवीनजी ने हर भारतवासी को आत्मशक्ति का रहस्य बताया। उनके राष्ट्रीयकाव्यधारा में प्रवेश ने ऐसा ज्वार उठाया कि युवकों के हृदय-बांध आक्रोश, उत्तेजना और विप्लव की भावना में टूट गये। जहाँ इस राष्ट्रीय काव्यधारा का उन्मेष भारतेन्दु-युग में हुआ और द्विवेदी-युग में गुप्तजी और रामनरेश त्रिपाठी ने उसे गौरव दिया; वहीं नवीनजी इसे एक प्रखर लावा उगलती गूंज दी, जिसकी अनुगूंज ने रोएँ खड़े कर दिए।

विप्लव का आवाहन करनेवाले नवीन जी की राष्ट्रीय-सांस्कृतिक कविता की भाषा में ओज गुण भरपूर है। इनके स्वर ध्वनिमय शब्दों का ऐसा ताना-बाना बुनते हैं जो हृदय-हृदय को क्रांति में बहा देता है। निश्चय ही, बालकृष्ण शर्मा नवीन ने परम्परा का विरोध न करते हुए भी युग-धर्म को महत्ता दी है। अपने प्रयोगों द्वारा उन्होंने अपनी रचनाओं की काव्य-संवेदना को नवीनता के भाव से संवलित-संचरित किया है।